प्रातः क्लास 18/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। याद की यात्रा का कदम बढ़ाते रहो। बच्चे जानते हैं पुरुषोत्तम संगमयुग की आयु बहुत थोड़ी है। 40 वर्ष से अभी बाकी 8 वर्ष रही है। आयु घटती जा रही है। हमको पहुँचना है बहुत दूर। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। 32 वर्ष तो चला गया। यह पुरुषोत्तम संगमयुग सबसे हीरे जैसा है। मोस्ट वैल्युएबुल है। यह भूल न जाना है। बाकी समय है थोड़ा घर पहुँचने में। सतोप्रधान बन घर जाना है। और कोई सजा आदि न खावें। पास विथ आनर हो जाना है। बाप कोई जास्ती मेहनत नहीं देते हैं, न कोई खर्चा है। न कोई मंदिर–मस्ज़िद वा धर्मशाला आदि बनानी है। यह भी समझते हो शिवबाबा तो है ही निराकार। उनको शरीर है नहीं। जो कुछ शिवबाबा के नाम पर देते हैं शिवबाबा फिर साकार बच्चों के ही काम में लगाते हैं। वह कोई अपने शान्तिधाम में महल–माड़ियाँ तो नहीं बनावेंगे। और तो सभी हैं देह–धारी मनुष्य पैसे इकट्ठे करने वाले। यह कहाँ इकट्ठा करेंगे? अभी देहली में डायरेक्शन देते रहते हैं सर्विस के लिए बड़े–2 म्युजियम बनाओ। तो शिवबाबा के नाम पर बनाते रहते हैं। ऐसे नहीं कि शिवबाबा को हाथ में देते हैं। जैसे मनुष्य ईश्वर अर्थ धर्मशाला वा हॉस्पिटल आदि बनाते हैं तो ईश्वर को कोई हाथ में थोड़े ही देते हैं। उनके नाम पर बनाते हैं। ईश्वर अर्थ दान–पुण्य करते हैं तो फिर दूसरे जन्म में अल्प काल क्षणभंगुर सुख मिलता है; क्योंकि यह दुनिया ही अल्पकाल क्षणभंगुर सुख की है। तो सुख भी अल्पकाल का मिलेगा ना। यहाँ तो शिवबाबा डायरेक्ट है। बाप ने तुमको अपना परिचय भी दिया है जिसका कोई को भी पता नहीं। नई बात है ना। अभी याद की यात्रा तो कल्प पहले भी बाप ने समझाई थी। यह पुरुषोत्तम संगमयुग तो जरूर होना चाहिए। यह शास्त्रों में तो लिखा नहीं है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही कनिष्ट पुरुष पुरुषोत्तम बनते हैं। यह लिखा न है। और जो भी धर्म स्थापक हैं सभी हैं शरीरधारी। बाकी यह धर्म स्थापन करने वाला है अशरीरी। इसलिए फिर इनके बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है। अभी कृष्ण कैसे नई दुनिया की स्थापना करेंगे? जबकि खुद ही नई दुनिया का प्रिन्स है। तो नई दुनिया कैसे स्थापन हुई सो बाप बताते हैं, मैं स्थापना करता हूँ। यह कृष्ण का अन्तिम 84वां जन्म है। जिसमें यह अच्छे कर्म कर यह (ल0ना0) बनते हैं। बाप तुमको भी अच्छे कर्म सिखलाते हैं। यह है ही विकारी दुनिया। नई दुनिया है निर्विकारी दुनिया। यह पुरानी दुनिया है विकारी। बाप कहते हैं अब दिन बाकी थोड़े हैं। संगमयुग का कितना समय बीत गया। अभी तो बच्चों को पुरुषार्थ करना बहुत है। बच्चे जानते हैं समय कैसे जाता रहता है। इतने वर्ष, इतने मास, इतने घंटा, इतने मिनट, सेकण्ड बीत गये। बाकी हैं 8 वर्ष। लाखों वर्ष का तो कोई हिसाब निकाल न सके। लाखों वर्ष कह देने से मनुष्य घोर–अंधियारे में पड़े हैं। बाप कहते हैं बच्चे यह पुरुषोत्तम संगमयुग का समय बीतता जा रहा है। कलियुग तो गया। मनुष्यों की बुद्धि में है कलियुग अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। वह अपनी विकारी चाल ही चलते रहते। अभी तुमको विकारी से निर्विकारी, पतित से पावन जरूर बनना है। अभी इस पतित दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। अभी सभी से बुद्धि का योग हटाते जाओ। इन सभी को छोड़ अपने घर जाना है। बाप को याद करना है और पवित्र भी बनना है। टाइम बहुत थोड़ा है इसलिए गफलत छोड़ो। गफलत करने वाले ईश्वरीय सर्विस कर नहीं सकते। जब खुद अच्छे बनें और को अच्छा बनावें। बुरे तो जरूर बुरा ही बनावेंगे। कोई भी छी छी काम वा भूल आदि न होनी चाहिए। इसलिए कचहरी भी होती है। तुम अभी ऐसी दुनिया में जाते हो वहाँ कोई भूल आदि होती ही नहीं; क्योंकि रावण–राज्य ही नहीं। भूल कराती है रावण। याद में न रहते हैं तब माया भूल कराती है। कितनी भूले मनुष्यों से होती रहती है। देवताओं के आगे भी जाकर कहते हम जन्म–जन्मान्तर के पापी हैं। अथाह पाप किये हैं। उनको यह पता नहीं रहता कि कितने जन्म लिये हैं। सिर्फ कहते हैं मैं जन्म–जन्मान्तर के पापिन हूँ। जहाँ भी जावेंगे, गंगा पर जावेंगे तो भी कहेंगे हमारे पाप काटना। जन्म–जन्मान्तर के पापिन हूँ। देवताओं के मंदिर में जावेंगे, शिव के मंदिर में जावेंगे यह जरूर कहेंगे। तुमको तो बाप ने बताया कि कितने जन्म लिये हैं। कोई ने 63, कोई ने 60, कोई ने 20,

कोई ने 10 जन्म पाप तो जरूर किये हैं ना। रावण के राज्य में पाप जरूर होते हैं। जन्म ही पाप से होता है। सन्यासियों का भी भ्रष्टाचार से जन्म होता है। भ्रष्टाचारी, श्रेष्ठाचारी किसको कहा जाता है यह भी गवर्मेन्ट समझती नहीं। समझते हैं सन्यासी पवित्र हैं वही श्रेष्ठाचारी होंगे। बाप समझाते हैं उन्होंने तो घर–बार छोड़ा है। स्त्री को विधवा और बच्चों को निधणका बनाकर जाते हैं। वह धर्म ही ऐसा है। यह भी न होते तो और ही गंदा बन जाते। फिर भी पवित्र तो रहते हैं ना। भारत है ही पवित्रता पर जमा हुआ। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई होता ही नहीं। आधा कल्प है पवित्र दुनिया। उसमें भी सतयुग को पूरा पवित्र कहेंगे। त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सतयुग को कहेंगे फूलों का बगीचा। सतयुग से फिर कैसे त्रेता, द्वापर, कलियुग में आये। कितने वर्ष, कितने मिनट पास हुए। बच्चों ने हिसाब तो निकाला है ना। बाकी संगमयुग का हिसाब रहा है। हिसाब करेंगे तो बाकी पूंछरी है 40 वर्ष की। वह भी समय पास होता जा रहा है। बच्चों के पुरुषार्थ में भी कितना रात–दिन का फर्क रहता है। मर्तबे भी नम्बरवार होते हैं ना। तुम इस संगमयुग के ब्राह्मण हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। कोई कुछ भी सर्विस नहीं करते। कोई तो बहुत सर्विस कर रहे हैं। तन–मन–धन से सर्विस कर रहे हैं। आत्मा का मन भी लगा हुआ है, धन भी लगा देते हैं। बाबा से पूछते हैं बाबा कहेंगे जाये म्युजियम आदि बनाओ। मैं क्या करूँगा? मुझे कोई घर आदि थोड़े ही बनाना है। मैं तो चला जाऊँगा। इनको भी यहाँ घर नहीं बनाना है जिसमें ममत्व रखे। ममत्व तो फट से मिटा दिया। अभी बच्चों का काम है बाप को फालो करना। यहाँ तो कुछ भी रहना न है। इसलिए गरीब अपना जमा करते रहते हैं। शिवबाबा हम यह जमा करते हैं नई दुनिया के लिए। यह तो मृत्युलोक पापात्माओं की दुनिया है। जो कुछ करते हैं उनका एबजा तो मिलता ही है। कल्प2 जिसने जो किया है वह करते रहते हैं। कितना बार किया होगा। देहली में भी म्युजियम बना रहे हैं। आपस में मिल–जुल कर सर्विस को बढ़ा रहे हैं। हिम्मते मरदा मददे शिवबाबा। तुम शिवबाबा पास भेज देते हो। शिवबाबा फिर तुमको देते हैं। हिम्मते बच्चे.....तुम हिम्मत करो। बाकी जो मदद चाहिए बाप से मंगा लो। कितनी सर्विस करते रहते हैं। पुरुषार्थ से समझा जाता है यह बेशक लायक हैं पास विथ आनर होने का। यह तो बिल्कुल नालायक है। मोचरा खाकर मानी टूकड़ ले लेंगे। पास विथ आनर सजा बिल्कुल नहीं खावेंगे। अपने को देखना है हमारे में कोई खामी तो नहीं। बगुलों साथ कोई लागत तो नहीं। नहीं तो ऊँच पद पा न सकेंगे। कोई तो बहुत जमा करते हैं, कोई तो कुछ भी नहीं। भल सतयुग में सुख तो सभी को होगा। गरीब भी बीमार आदि नहीं होंगे; परन्तु मर्तबे में फर्क तो होता है ना। दुख की दुनिया में भी गरीब साहुकार का फर्क है तो सुख की दुनिया में भी गरीब साहुकार का फर्क होगा। अपने अन्दर देखो हमने सारा दिन बाबा की कितनी सर्विस की। बाप तो कहते हैं म्युजियम अथवा रूहानी युनिवर्सिटी का प्रबन्ध करना है। मकान आदि खरीद भी नहीं करना है शिवबाबा कहते हमको क्या पड़ा है जो मकान आदि लेवे फिर इतना भरकर देना पड़े। किराया पर लेते जाओ। फिर मकान उनकी मिलकीयत। पैसे काम में लग जाये। रह न जाये। ऐसा छोड़े ही क्यों जो माया हप कर ले। कितना युक्ति से काम चलता रहता है कल्प2 मिसल। बच्चे कितना बिजी रहते हैं। ख्याल होता है जल्दी तैयार हो जाये बहुतों का कल्याण करे। बाबा भी दिन प्रतिदिन प्वाइंट्स सहज देते रहते हैं। विकारी और निर्विकारी दुनिया भी देख रहे हो। अभी ऐसा(ल0ना0) बनना है। बाप तो ऐसा बनाने आये हैं। फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे। दैवीगुण धारण करनी है। किसको दुख न देना है। छी छी अक्षर मुख से न निकालना है। सतयुग में 5 विकार होते ही नहीं। अभी बाप स्वर्ग में ले जाते हैं तो किचड़ा सब छोड़ दो। नहीं तो बहुत सजा खानी पड़ेगी। आत्मा को किचड़ा साथ तो स्वर्ग में जाना न है। या तो योगबल से ख्लास करना है या तो फिर सजाओं से। बच्चों को समझानी मिलती रहती है। ड्रामा अनुसार हूबहू कल्प पहले मिसल तुम्हारी चलन चलती रहती है। किसको भी दुख न देना है। इसमें मुख्य है आँखें। तिजरी की कथा भी है ना। वास्तव में है ज्ञान का तीसरा नेत्र। बाकी वह कथाएँ आदि तो सभी झूठे हैं, कोई जानते ही नहीं। अभी सच्चा बाबा तुमको

सच्ची2 बातें सुनाते हैं। वह सत्य ना0 की कथा कितनी बारी सुनी होगी। प्रैक्टीकल हो जाता है बाद में पास्ट की कथाएँ बैठ सुनाते हैं। अभी सच2 बात तुम प्रैक्टीकल में सुन रहे हो। आधा कल्प तुम झूठी कथाएँ सुनते आये हो। अब सच2 नर से ना0 बनने की युक्ति बाप बताते हैं। यह ल0ना0 ही जो सतोप्रधान थे वह फिर जन्म–मरण में आते2 तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। शरीर तो हर जन्म में बदलती जाती है। कृष्ण सदैव कृष्ण ही थोड़े ही हो सकता है। नाम–रूप, देश–काल तो सभी बदलता है ना। 5000 वर्ष से कितने वर्ष, दिन, घंटे, सेकण्ड बदलते गये। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग के भी दिन बीतते जा रहे हैं। इसलिए अपना सुधार करते जाओ। यह तो बाबा जानते हैं जिन्होंने कल्प पहले जितना सुधार किया है उतना ही कर रहे हैं। सर्विस करते रहते हैं। तो सर्विस नहीं तो डिससर्विस ही करते रहते हैं। फिर डिस सर्विस से तो ऊँच पद मिल न सके। सर्विस क्या करनी है किसको सुखधाम का मालिक बनाना। बेहद का बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनको अपना कोई लोभ नहीं है। जैसे सन्यासियों को होता है। महल बनावे यह करें। शिवबाबा का तो यह एक ही फ्लैट(रथ) मिल गया है। खुद कहते हैं मैं सबसे पुराना शरीर लेता हूँ; क्योंकि इनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश करता हूँ। पहले नम्बर में भी यह था। फिर गिरकर यह बना है। फिर मैंने ही इनका नाम ब्रह्मा रखा है। इनको मैंने शूद्र से ब्राह्मण बनाया। यही जो नम्बरवन में था वह अभी लास्ट में है। 84 जन्म लेते आये। फिर इनके वानप्रस्थ अवस्था में आकर मैं प्रवेश करता हूँ। यहाँ पावन शरीर तो कोई मिल न सके। आना भी भारत में ही है। कृष्ण ही गोरा और फिर सांवरा बनता है। तो फिर इनको ही बैठ पहले नम्बर में जाना है। कितना सहज रीति समझाते हैं। समझने वाले झट समझ जाते हैं। आगे चल फिर जल्दी2 समझते जावेंगे। मौत सिर पर आवेगा। अभी तो अज्ञान नींद में हैं। फिर जागेंगे। तो बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों अपन को सुधारते रहो। सुधार की निशानी है सर्विस कर आप समान बनाना। अपनी उन्नति करनी चाहिए। कई बच्चे हैं जिनको उन्नति का तो ख्याल ही नहीं आता। बुद्धि बाप तरफ ठहरती ही नहीं। बेहद का बाप आकर बेहद की नॉलेज देते हैं। यह अनादि चक्र फिरता ही रहता है। 5000 वर्ष के बदली फिर लाखों वर्ष कह देते हैं। बाप कहते हैं तुमने मेरा कितना अपकार किया। फिर भी मैं आकर सभी पर उपकार करता हूँ। तुमने बहुत अपकार किया है। कल तो गाली देते थे कच्छ–मच्छ अवतार, कुत्ते–बिल्ले, पत्थर–भित्तर सब में कह देते थे। अभी तो तुम ऐसे कह कर देखो। कहेंगे? नहीं। कितना रांग तुम समझते थे। यह है ही अनराइटियस दुनिया। वह राइटियस दुनिया है। यहाँ राइट्स न बोलने वाले हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको सत्य बताता हूँ या भक्तिमार्ग में तुमने सत्य सुना है? बाप जो सुनाते हैं वह जरूर सत्य ही होगा। भक्तिमार्ग में तो रावण की आसुरी बुद्धि बन जाते हैं। फिर ईश्वरीय बुद्धि से तुम कितने ऊँच बनते हो। आसुरी बुद्धि से तुम वाममार्ग में चले गये। देवताओं के लिए ही दिखाया है वाममार्ग में गये। फिर उनको देवता नहीं कहा जाता। अभी यह है मनुष्यों की दुनिया। वह थी देवताओं की दुनिया। अर्थात् दैवीगुण वाले। यहाँ है आसुरी गुण वाले। यह ईश्वर बाप बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण को ईश्वर थोड़े ही कहेंगे। यह भी भूल है। भक्तिमार्ग में मनुष्य कितने भूले करते हैं। बाप कहते हैं पास्ट इज पास्ट यह तो फिर भी होगा। ऐसे नहीं तोबा भरनी है। तोबा की तो बात ही नहीं। बाप ने समझाया है 63 जन्म तुमने भक्ति की है। वहाँ तो जन्म ही थोड़े होते हैं; क्योंकि योगी हैं। अभी मैं तुमको इस रथ द्वारा पढ़ा रहा हूँ। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? नई दुनिया, स्वर्ग की। तुमको ऐसा बनना है। बाकी थोड़ा टाइम है। नये2 को इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। तुमको जितनी करनी पड़ती है; क्योंकि दिन–प्रतिदिन प्वाइंट्स अच्छी निकलते रहते हैं। दो/चार दिन में ही एकदम बुद्धि में बैठ जाता है। आगे आ जाते हैं। इतना समय हमने ऐसे ही गंवाये दिया। अभी तो फिर बहुत पुरुषार्थ करना है। याद की यात्रा की ही मेहनत करनी है। मौत जब सामने आ जाता है तो फिर तुम बहुत तीखी मेहनत करने लग पड़ेंगे। जितना जो मेहनत करेंगे। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।